bdkbZ 39 f=ykspu ¼Q.kh'ojukFk js.kq½ % okpu vkSj fo'ys"k.k

bdkbZ dh :ijs[kk

39.0 उद्देश्य
39.1 प्रस्तावना
39.2 संस्मरण का वाचन
39.3 संस्मरण का सार
39.4 संदर्भ सहित व्याख्या
39.5 संस्मरण की अंतर्वस्तु
39.6 लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति
39.7 संरचना-शिल्प
39.8 प्रतिपाद्य
39.9 सारांश
39.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

39-0 mís';

स्नातक उपाधि कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी के ऐच्छिक पाठ्यक्रम 'हिंदी गद्य' (बी.एच.डी.एफ-101) के अंतिम खंड की यह सातवीं इकाई और पाठ्यक्रम की 39वीं इकाई है। इस इकाई में आप हिंदी के कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा हिंदी के प्रगतिशील कवि त्रिलोचन शास्त्री से संबंधित संस्मरण 'त्रिलोचन' का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- 'त्रिलोचन' के वाचन से उसकी अंतर्वस्तु का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे;
- 'त्रिलोचन' में आये कठिन शब्दों के अर्थ बता सकेंगे;
- 'त्रिलोचन' के प्रमुख अंशों की संदर्भ सहित व्याख्या कर सकेंगे;
- 'त्रिलोचन' की अंतर्वस्तु की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- 'त्रिलोचन' में चित्रित परिवेश की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- 'त्रिलोचन' में लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- 'त्रिलोचन' का संस्मरण की विशेषताओं के संदर्भ में और उसकी भाषा और शैली की विशेषताएँ बता सकेंगे; और
- 'त्रिलोचन' के प्रतिपाद्य का विवेचन कर सकेंगे।

39-1 izLrkouk

'हिंदी गद्य' के इस पाठ्यक्रम के इस छठे खंड में अब तक आपने निबंध, व्यंग्य निबंध, ललित निबंध, रेखाचित्र विधाओं का अध्ययन किया है। इस इकाई में आप संस्मरण विधा का अध्ययन करेंगे। इस इकाई में आप फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित 'त्रिलोचन' का अध्ययन करेंगे। यह रेणु जी द्वारा लिखा एक संस्मरण है। त्रिलोचन शास्त्री भी हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ कवि हैं और प्रगतिशील कवि के रूप में उनकी विशिष्ट पहचान है। वे रेणु के समकालीन हैं। त्रिलोचन शास्त्री और फणीश्वरनाथ रेणु दोनों का देहावसान हो चुका है। 4 मार्च, 1921 में जन्मे रेणु जी हिंदी के प्रख्यात कथाकार माने जाते हैं। वे नयी कहानी आंदोलन से संबद्ध कहानीकार हैं और उनकी एक कहानी 'ठेस' का अध्ययन आपने इसी पाठ्यक्रम के दूसरे खंड में किया होगा। रेणु की प्रख्यात रचना 'मैला आंचल' जो हिंदी का पहला आंचलिक उपन्यास है, उसका भी अध्ययन किया होगा। कहानी और उपन्यास के अलावा भी रेणु जी ने संस्मरण, रिपोर्ताज आदि अन्य कई विधाओं में भी उत्कृष्ट रचनाएं की हैं। उनका देहावसान 11 अप्रैल, 1977 को हुआ था। इस खंड में आप उनका लिखा संस्मरण 'त्रिलोचन' का अध्ययन करेंगे। त्रिलोचन शास्त्री हिंदी की प्रगतिशील धारा के प्रमुख कवियों में गिने जाते हैं। 20 अगस्त 1917 को जन्म त्रिलोचन ने काव्य विधा में ही अपना अधिकतर लेखन किया है। उनके द्वारा लिखे सॉनेट अत्यंत प्रसिद्ध हैं। हालांकि उन्होंने कुछ कहानियां भी लिखी हैं। कवि के रूप में ही नहीं बल्कि व्यक्ति के रूप

में भी त्रिलोचन बहुत लोकप्रिय थे। उनकी गहरी अंतर्दृष्टि और सहज स्वभाव लोगों को आकर्षित करता था। यह बात रेणु जी के लिखे संस्मरण से भी जाहिर होती है। उनका देहावसान 9 दिसंबर, 2007 को हुआ था। त्रिलोचन शास्त्री के बारे में रेणु ने यह संस्मरण 1970 में लिखा था। यह बहुत विस्तृत नहीं है और लेखक सिर्फ त्रिलोचन के साथ अपनी संक्षिप्त मुलाकातों तक ही संस्मरण में सीमित रहा है। इसके बावजूद वह त्रिलोचन जी के व्यक्तित्व के कई ऐसे पहलुओं को उभारने में कामयाब रहा है जिनसे उनकी विशिष्टता और साहित्य के प्रति उनकी गहरी सूझ-बूझ का पता लगता है। सबसे पहले आप इस संस्मरण का अध्ययन कीजिए और फिर उसकी विशेषताओं के बारे में जानिए।

39-2 lLej.k dk okpu

त्रिलोचन से जब पहली बार दषाश्वमेध घाट[1] की सीढ़ियों पर उतरने वाली सड़क पर मेरा परिचय करवाया गया तो, उन्होंने 'उलाहना' भरे स्वर में व्यंग्यमयी मुस्कुराहट के साथ कहा था– 'खूब मच्छड़ कटवाया है 'बँसवड़िया' में आपने····[2]।'

'मैला आँचल' की राजपूत-टोली के शिवशक्कर सिंह के 'बेपानी'[3] होने के प्रसंग में, उनकी यह उक्ति सुनकर उस समय मुझे लगा था, त्रिलोचनजी को किसी कारणवश 'मैला आँचल' पसंद नहीं। होटल, लौटकर, बहुत देर तक सोचता रहा था– सारे उपन्यास में बस वही 'स्थल' बँसवड़िया ही क्यों याद रहा त्रिलोचन को? बाँसों का झुरमुट, अंधकार में जुगुनुओं की चमक, साँपों की बाँबियों से आती हुई रीस-भरी[4] फुफकार और सहस्त्रों मशकों[5] का एक ही साथ शत-शत दंशन····?

दूसरे दिन किसी मित्र से जब यह सुना कि, त्रिलोचनजी 'मैला आँचल' के प्रशंसकों में से हैं तो फिर उस रात को बहुत देर तक बस यही सोचता रहा कि सारी किताब में त्रिलोचनजी को वही 'स्थल' और वही 'प्रसंग' क्यों याद रहा?

और, पहली मुलाकात-बात के समय से आज तक जब भी त्रिलोचन को देखता हूँ, क्षण-भर के लिए 'भरम-जाल' में पड़ जाता हूँ : अपने गाँव के समृद्ध कबीर-पंथी मठ पर, बचपन में ही - कबीर चौरा काशीजी से आये हुए एक 'संद्यः यौवन' कबिराहा बाबाजी को देखा था– लँगोट बाँधकर 'आसन' करते और ढाई सेर धारोष्ण[6] दूध (भैंस का) पीते। मठ के अधिकारी भंडारी, साधु वैरागी जिसके बारे में बातें करते–'विदियारथीजी मोती जैसन अक्षर में बीजक लिखलन है···· ई विदियारथी तो बीजक के एक-एक गो 'साखी' और 'शबद' के ऐसन-ऐसन बिलच्छन आ 'अमनियाँ अरथ' अपन--'तहियायेल शखा' में समझावे हैं कि सार 'सुन्ननिहार-सव' के 'अथि' फट जाये···· ।'

याद है, धूनी के पास बैठकर विद्यार्थीजी कई गृहस्थ-सेवकों को कुछ समझा रहे थे। बातचीत की कई पंक्तियाँ, अपनी 'शाब्दिक-रहस्यमयता' तथा विलक्षणता के साथ आज तक याद हैं- कि 'एक अंड ओंकार ते सब जग भया पसार'[7] और 'ओ ररा रमा की भाँति रूरी; सब सन्तउघारिन चूँदरी···· ।'

सो, त्रिलोचन को देखते ही मुझे पहले उसी बाबाजी– विद्यार्थीजी की याद आ जाया करती है और ये ही पंक्तियाँ अंतर्मन में ध्वनित होती हैं– 'एक अंड ओंकार ते सब जग भया पसार···· ।'

कभी त्रिलोचनजी को अपने साथ अपने गाँव ले चलूँ तो, मेरा विश्वास है कि परिचय करवाने की आवश्यकता नहीं होगी। बड़े-बड़े गृहस्थ गृहों की 'भक्तिमय आत्माएँ' उनके पास आकर, अपने चेहरे से 'चुनरी' हटाकर, नैनों से नैना मिलाती 'कबिराहा अंदाज' में दोनों हाथ जोड़कर, विगलित-सी[8] होती हुई पुकार उठेंगी– 'सा-हे-ब! बंदगी !!'···· त्रिलोचनजी निश्चय ही अचरज

[1]बनारस में गंगा के किनारे का एक प्रसिद्ध घाट
[2]यहां त्रिलोचन शास्त्री रेणु के प्रथम उपन्यास 'मैला आँचल' के एक प्रसंग की ओर संकेत कर रहे हैं
[3]बिन पानी;
[4]क्रोध भरी या ईर्ष्या भरी
[5]भेड़ या बकरी की खाल को सीकर बनाया हुआ एक थैला जिसमें भिश्ती पानी भरकर ढोते हैं
[6]तुरंत का दूहा हुआ दूध
[7]एक ओंकार से ही समस्त सृष्टि की रचना हुई है
[8]पिघला हुआ

में पड़ जायेंगे। मजा आ जायेगा!! अथवा, यह भी हो सकता है कि, त्रिलोचन हमारे गाँव के हर 'सतरंगी' जीव को देखते ही नाम ले-लेकर पुकार उठें और हमें ही घोर अचरज में डाल दें। ....अथवा, शाम के झुरपुटे में किसी पगडंडी को पार करते समय, किसी 'बँसवड़िया' के घुप्प अंधकार में डूबती हुई झाड़ी की ओर दिखलाकर पूछें– 'क्यों, रेणुजी, यही वह जगह है न, जहाँ ....?' (सोचता हूँ और अपने से ही पूछता हूँ कि आखिर....यार! तुम ही उस जगह की चर्चा छिड़ते ही इस तरह सर्द क्यों हो जाते हो? तुम्हारा चेहरा रक्तहीन क्यों हो जाता है? त्रिलोचन ने तुम्हें पकड़ा है या शिवशक्कर सिंह को गाँव के लड़कों ने??)

कई बार चाहा कि, त्रिलोचन से पूछूँ–आप कभी पूर्णिया जिला की ओर किसी भी हैसियत से, किसी कबिराहा-मठ पर गये हैं? किन्तु पूछकर इस 'भरम' को दूर करना नहीं चाहता। इसे पाले रहना चाहता हूँ। इसलिए, जब त्रिलोचन से मिलता हूँ, हाथ जोड़कर, मन-ही-मन कहता हूँ– सा-हे-ब ! बं-द-गी !!'

कविता मेरे लिए समझने-बूझने या समझाने का विषय नहीं, जीने का विषय है। कवि नहीं हो सका, यह कसक सदा कलेजे को सालती रहेगी। और, अगर कहीं कवि हो जाता तो, त्रिलोचन नहीं हो पाने का मलाल जीवन-भर रहता। संभव है, तब त्रिलोचन के एक सॉनेट की 'पैरोडी' लिखकर सहस्रलोचन नाम से प्रकाशित करवाने की हिमाकत भी कर बैठता। और, मैं त्रिलोचन ही क्यों होना चाहता– पंत, नरेंद्र, सुमन, बच्चन, महादेवी, दिनकर, नलिनविलोचन अथवा रेणु क्यों नहीं? यह सवाल मैं अपने-आपसे बार-बार पूछता रहता हूँ।

त्रिलोचन ने अपने बारे में मुँह से अपने सॉनेट में जो कुछ भी कहा है, उसके अतिरिक्त 'और कुछ' जानने-सुनने की वासना मन में कभी नहीं जगी। और न कभी मन में लगनेवाली गुदगुदी को त्रिलोचन की ग़ज़लों को गुनगुनाकर सहलाया। ग़ज़ल, काज़ी नज़रुल की भी मुझे कभी नहीं रुची-जँची। त्रिलोचन के सॉनेट के लिए ही मैं उसे 'शबद योगी' कहता हूँ। उसके कुछ सॉनेट हद-अनहद की सीमा को लाँघकर– साखी, शबद, रमैनी की कोटि के हो गये हैं। त्रिलोचन ने बहुत कम लिखा है। अर्थात् बहुत अल्प 'उत्पादन' किया है। किन्तु, मेरे लिए त्रिलोचन का 'होना' मात्र उसकी रचनाओं से 'अधिक' है। अतएव 'सुपर मार्केट डिपार्टमेंट स्टोर-संस्कृति'[9] के बटखरों[10] से त्रिलोचन को तोलने के लिए तुले हुए लघु-गुरु आलोचकों से कभी बहस नहीं करना चाहता। बात बहककर सांप्रदायिक युद्ध और'जाति-संघर्ष' तक पहुँचा जा सकती है। (बिहार को ही जातिवाद के लिए नाहक बदनाम क्यों किया जाता रहा है?) और, भारत धर्म-निरपेक्ष देश है और, इस 'सुरक्षा-चैतन्य-समाज'[11] में स्वयं को सुरक्षित रखना ही जीवन का प्रथम 'प्रिंसिपुल'[12] है।

यह कहना तकियाकलाम[13] हो गया है कि, किसी व्यक्ति का उसके जीवन-काल में, सही जायजा नहीं किया जा सकता। क्या मृत्यु के बाद भी किसी व्यक्ति के जीवन का सही लेखा-जोखा करना सहज और संभव है? किसी व्यक्ति के जीवन को, विभिन्न स्तरों पर, अलग-अलग दृष्टि से देखा-परखा जा सकता है। और इस तरह देखी हुई तस्वीर, दूसरे स्तर से देखी हुई 'छवि' से भिन्न ही नहीं–एक-दूसरे को 'कंट्राडिक्ट'[14] भी करती है। ऐसी अवस्था में अंततः कोई भी तस्वीर सही नहीं मानी जा सकती। हम ऐसी ही 'अधूरी तस्वीरों' को 'मिथक' (कूटार्थ) अथवा लोकोक्ति और किंवदंतियों से रँगकर, महिमामंडित करके चला देते हैं। इसलिए हर पीढ़ी का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि, वह ऐसे 'चालू सत्यों'[15] का फिर से अन्वेषण करें, फिर से इतिहास को लिखे और पुरानी गलतियों को सुधारकर 'ज्ञान' की मशाल अगली पीढ़ी के हाथ में थमा

[9] 1970 के दशक में देश के छोटे-बड़े शहरों में सहकारी बाज़ार और डिपार्टमेंट स्टोर खोले गये थे जहां रोज़मर्रा की वस्तुएं मिलती थीं। रेणु का इशारा उन्हीं की तरफ है। यह खरीददारी की पहले से चली आ रही परंपरा से अलग है

[10] बाट, तोलने के लिए इस्तेमाल होने वाला लोहे का टुकड़ा

[11] सुरक्षा के प्रति सावधान समाज

[12] अंग्रेजी शब्द प्रिंसिपल यानी उसूल

[13] बातचीत के दौरान बारबार दोहराया जाने वाला कोई शब्द या पद

[14] अंग्रेजी शब्द, विरोधाभास

[15] रोज़मर्रा की सच्चाई

दे।;;;;; इस प्रसंग में, एक उदाहरण दूँ- स्वर्गीय शिशिर भादुड़ी[16] के स्वर में रवीन्द्रनाथ[17] की कविता की आवृत्ति सुनने के बाद, स्वयं कवि के स्वर में (ग्रामोफोन रेकार्ड) उनकी कविता सुनकर कितना दुख हुआ था, यह लिखकर नहीं बता सकता। उस विराट व्यक्तित्व के कंठ से निकलने वाली आवाज–यूथिका राय[18] अथवा कमला झरिया[19] की आवाज जैसी होगी, इसकी कल्पना मैंने स्वप्न में भी नहीं की थी। बाद में, बार-बार रेकार्ड बजाकर कविता के एक-एक शब्द को उच्चरित होते हुए सुनकर–कविता की पंखड़ियों को, धीरे-धीरे खुलते देखा था–सहज ढंग से। तब, शिशिर बाबू की आवृत्ति 'मिथ्या-सी– लगने लगी थी। किन्तु शिशिर बाबू की ध्वनियों से निर्मित रवीन्द्र की तस्वीर संपूर्ण सत्य नहीं तो–एकदम झूठ भी नहीं।

त्रिलोचन के साथ मैंने कभी दो-ढाई घंटे से ज्यादा नहीं बिताये हैं। लेकिन, मन को हमेशा ऐसा लगता है (?) कि, इस व्यक्ति के साथ क्यों दिन-रात रह चुका हूँ। इसकी छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी अच्छी-बुरी आदतों को, अच्छी तरह जानता हूँ।····

उस बार, शंभूनाथ मिश्र के घर पर त्रिलोचन जी का चिमटा गड़ा[20] था। सुबह, जिस समय पहुँचा–करीब दस बजे त्रिलोचन के 'प्रसाद' पाने का समय था। (कबिराहा बाबाजी लोग भात को 'प्रसाद', जलपान को 'बालभोग' और नमक को 'रामरस' कहते हैं और कबिराहा गृहस्थ प्याज को 'राम लड्डू'!) ड्राइंग रूम में ही टेबुल के 'कवर' को हटाकर थाली लगा दी गयी। हमारे परिवार में, बचपन से ही बड़ों के भोजन के समय पास बैठकर 'भोजन' देखने की आदत डलवायी जाती थी। पंखा झलते हुए, पंखे से मक्खी उड़ाते हुए अथवा गिलास का पानी बदलते हुए, हम बड़ों का भोजन देखा करते। परिवार के 'संत-मति' कर्ता का विश्वास था कि, इससे बालक परम 'संतोषी' होता है और भोजन करने का सही सलीका सीखता है।–'संतोषी' हुआ या नहीं, कह नहीं सकता। किंतु लोगों को भोजन करने के इतनी तरह के तरीके ढंग और आदतों को देखकर मानवचरित्र की विचित्रताओं पर मुग्ध अवश्य हुआ हूँ। इसलिए, त्रिलोचन के भोजन के समय पहुँचना अच्छा ही हुआ। सोचा, अगर वे, भोजन काल में शरीर को एक 'आइलैंड' यानी 'द्वीप' समझने वाले जीव हुए तो, मैं तब तक कुछ पढ़ने का बहाना करता हुआ–बैठा रहूँगा और, यदि वे, भोजन का रस लेते हुए प्रेमियों से 'रसभरी बतियाँ' करने वाले हुए तो फिर क्या कहने! पापड़ टूटने की कुड़कुड़ाहट! चटनी अथवा अचार खाकर चटखारे लेते, और हरी मिर्च को दाँत से तनिक खोंटकर 'सित्कार'···· करते बातें करेंगे तो, सब कुछ एक ही साथ देखने-सुनने का मौका मिल जायेगा। (आलू का 'चोखा' सानकर तैयार करना एक 'आर्ट' है और मुझे उसी दिन पता चल गया कि शंभूनाथ के चौके-चूल्हे तक पर 'आर्टिस्टों' का कब्जा है।)

बहरहाल, खाते-खाते बातें होती रहीं और, उनके भोजन करने के ढंग से यह जानना बाकी नहीं रहा कि, त्रिलोचन का पेट 'बुफे'[21] नामक किसी भोज में मेरी तरह, कभी नहीं भर सकेगा। दूसरे देशों में क्या होता है, नहीं जानता। अपने देश के कई महानगरों के महाभोजों के इस बुफे (का व्युत्पत्ति?) में शरीक होने के समय मुझे बार-बार एहसास हुआ है 'भारत में कितनी भूख है?' झपट्टे मारते हुए चतुर चीलों (नर-मादा) से त्रिलोचन नहीं जीत सकेंगे। उन्हें कभी 'चिकन' का कोई बढ़िया 'पीस' नहीं मिल सकेगा! मुर्गी की मांसल 'रान' कभी हासिल नहीं कर सकेंगे!! इसलिए –'अजी माल था! तुष्ट हूँ यहाँ'– कहने का कोई सवाल ही नहीं उठेगा। 'पहले खाना मिला करे तो कठिन नहीं है बात बनाना।'

भोजन कर चुकने के बाद त्रिलोचन अन्य आगत सज्जनों से साहित्य-विषयक बातें करने लगे। हमारे एक भाषा-शास्त्री मित्र, अपनी पत्नी द्वारा लिखित व्यक्तिगत निबंधों की सद्यःप्रकाशित पुस्तक ले आये थे। एक निबंध में 'कैक्टस' की चर्चा करते हुए-उसकी पुष्पहीनता पर तरस खाकर कुछ कहा गया था। मैंने कहा– 'किंतु, कैक्टस के भी फूल होते हैं। यानी फूलनेवाले कैक्टन भी होते हैं।;···· मैं कहना चाहता था– उदाहरण सामने है। अर्थात् त्रिलोचन,

---

[16]बंगाली रंगमंच के अभिनेता और गायक जिन्होंने रवींद्र के गीतों को भी गाया है

[17]महान बांग्ला कवि और कलाकार रवींद्रनाथ टैगोर जिन्हें उनकी काव्य रचना 'गीतांजली' पर नोबेल पुरस्कार भी मिला है

[18]बांग्ला गायिका

[19]बिहार की बांग्ला गायिका

[20]एक जगह जमकर बैठ जाना

[21]भोज की आधुनिक पद्धति जिसमें लोग भोजन की प्लेट हाथ में लेकर खड़े-खड़े भोजन करते हैं।

फूलनेवाला कैक्टस। कहा नहीं, क्योंकि इसके कुछ क्षण पूर्व ही, मुझे उनके उस सॉनेट की पंक्तियाँ याद आयी थीं– जिसमें दषाश्वमेध घाट के 'चित्र-कल्प' हैं। सो मेरे लिए तो–

दषाश्वमेध घाट पर गंगा की धारा है
तट पर जल के ऊपर ऊँचे (भवन नहीं)
त्रिलोचन खड़े हैं ····

कबीर को पढ़ते समय मेरा मन 'भाई साधो' का हो जाता है। फारसी के कवि जलालुदीन रूमी का मैंने नाम सुना ही है। अर्थात् विद्वानों के लेखों में उद्धृत उनकी कुछ पंक्तियों के भावानुवाद को पढ़कर ही रोम-रोम बजने लगते हैं। बंगाल के प्रसिद्ध बाउल-गायक लालन फकीर के गीतों को सुनते समय 'देहातीत सुख' का परस-सा पाया है और त्रिलोचन के सॉनेट पढ़ते समय यह देह-यंत्र 'रामुरा झिं-झिं' बजने लगता है और तन्मय-मन को लगता है–

वाणी से सावन फूटा ऋतुओं सहित,
भक्ति की गाँठ कस गयी भींग-भींगकर,
आत्म-व्यंजना को जगा····।
(मैंने 'आत्मा-व्यंजना' ही लिखा है न?
'आत्मा-वंचना' तो नहीं?)
····साऽहे-ब! बं-द-गी!

त्रिलोचन (जी) को देखते ही हर बार मेरे मन के ब्लैक बोर्ड पर, एक 'अगणितक', असाहित्यिक तथा अवैज्ञानिक प्रश्न अपने-आप लिख जाता है : 'वह कौन-सी चीज है, जिसे त्रिलोचन में जोड़ देने पर वह शमशेर हो जाता है और घटा देने पर नागार्जुन····?'

ck/k i'u

1. त्रिलोचन पहली बार मिलने पर रेणु की किस रचना के बारे में टिप्पणी करते हैं?
   क) परती परिकथा
   ख) मैला आँचल
   ग) जुलूस
   घ) दीर्घतपा ( )
2. त्रिलोचन के कुछ सॉनेट निम्नलिखित में से किस परंपरा में आते हैं?
   क) साखी
   ख) शबद
   ग) रमैनी
   घ) उपर्युक्त सभी ( )
3. इस संस्मरण में जिन कवियों का उल्लेख किया गया है उनमें से कम-से-कम चार कवियों का नामोल्लेख कीजिए।

.....
.....
.....
.....

39-3 lLej.k dk lkj

फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित यह संस्मरण हिंदी के प्रगतिशील कवि त्रिलोचन शास्त्री के बारे में है। इस संस्मरण का शीर्षक ही 'त्रिलोचन' है। संस्मरण के आरंभ में ही रेणु ने त्रिलोचन के साथ अपनी पहली मुलाकात का उल्लेख किया है। यह पहली मुलाकात बनारस में दषाश्वमेध घाट की सीढ़ियों पर उतरने वाली सड़क पर होती है। त्रिलोचन का बनारस से गहरा नाता रहा है। उन्होंने अपने जीवन के कई साल बनारस में बिताए हैं। जब त्रिलोचन को रेणु जी का परिचय दिया जाता है तो उन्हें 'मैला आँचल' का एक प्रसंग याद आ जाता है। त्रिलोचन मच्छर कटवाने के प्रसंग का उल्लेख करते हैं। इस उल्लेख से रेणु असमंजस में पड़ जाते हैं कि त्रिलोचन जी को उपन्यास पसंद आया या नहीं। उन्हें यह लगता है कि शायद त्रिलोचन को 'मैला आँचल' पसंद नहीं आया है और इसी कारण वे व्यंग्य से मच्छर काटने का उल्लेख कर रहे हैं। लेकिन

बाद में किसी अन्य से रेणु को मालूम पड़ता है कि त्रिलोचन 'मैला आँचल' के प्रशंसकों में से है। त्रिलोचन से रेणु की जब भी मुलाकात होती है तो उन्हें अपने गाँव के कबीर पंथी मठ के एक कबिराहा बाबा की याद आ जाती है जो 'लंगोट' बांधकर आसन करते और ताजा दूहा हुआ भैंस का ढाई सेर दूध पीते थे। ये साधु बाबा विद्यार्थी जी के नाम से जाने जाते थे। इन्हीं विद्यार्थी जी को देखकर रेणु को त्रिलोचन की और विशेष रूप से विद्यार्थी जी की ये पंक्तियां *'एक अंड ओंकार ते सब जग भया पसार'* जरूर आती थी। शायद रेणु ये कहना चाहते हैं कि त्रिलोचन को देखकर एक ऐसे व्यक्तित्व की याद आती है जिसमें संपूर्ण जग समाया हुआ है। त्रिलोचन जी के व्यक्तित्व में जो देशीपन है वह भी रेणु को आकृष्ट करता है। इसलिए वह सोचते हैं कि यदि मैं उनको अपने गांव ले जाऊं तो, न तो उन्हें और न ही गाँव के लोगों को परायापन लगेगा। रेणु कथाकार थे लेकिन कविता के प्रति उनका गहरा अनुराग था। कविता को वे जीने का विषय समझते थे और उन्हें इस बात का अफसोस था कि वे कवि न हो सके। वे ऐसी स्थिति की कल्पना करते हैं कि यदि वह कवि हो भी जाते तो उन्हें इस बात का अफसोस रहता कि वह त्रिलोचन न हो सके। वे त्रिलोचन के लिखे सॉनेट से काफी प्रभावित थे और उनके लिखे कुछ सॉनेट 'हद-अनहद की सीमा को लाँघकर-साखी, शबद, रमैनी की कोटि के हो गये हैं'। यानी त्रिलोचन के सॉनेट कबीर के काव्य की कोटि के हैं। त्रिलोचन को वे इतना महान कवि मानते हैं कि आलोचकों द्वारा उनके बारे में कही गयी बातों को ज्यादा महत्त्व नहीं देते। यहां रेणु एक महत्त्वपूर्ण बात कहते हैं। यह आमतौर पर कहा जाता है कि व्यक्ति का वास्तविक मूल्यांकन उसकी मौत के बाद ही हो पाता है। लेकिन रेणु सवाल करते हैं कि क्या मृत्यु के बाद भी सही मूल्यांकन हो पाता है? हरेक अपने-अपने ढंग से व्यक्ति की छवि बनाता है और कई बार एक ही व्यक्ति की ये भिन्न-भिन्न छवियां एक दूसरे की विरोधी नज़र आती है। इस संदर्भ में वे रवींद्रनाथ टैगोर के गीतों का उदाहरण देते हैं। रवींद्र गीतों को शिशिर भादुड़ी की आवाज में सुनने पर उन्हें रवींद्र की खुद की आवाज में सुने हुए गीत काफी कमजोर लगे थे और रेणु को इस बात से बहुत दुख हुआ था। लेकिन बार बार सुनने पर उन्हें रवींद्र के स्वर में सुनी कविताओं का अर्थ जिस तरह से खुलकर सामने आया उसके बाद शिशिर भादुड़ी की आवाज में मिथ्यापन का बोध होने लगा था। एकबार उनकी त्रिलोचन से मुलाकात शंभूनाथ मिश्र के घर पर होती है। त्रिलोचन उनके सामने बैठकर खाना खाते हैं और रेणु से बाते भी करते जाते हैं। खाना खाते हुए बात करने की उनकी पूरी प्रक्रिया को देखते हुए रेणु के मन में प्रश्न उठता है कि क्या त्रिलोचन का पेट बुफे नामक किसी भोज में भर सकता है? यह महत्त्वपूर्ण है कि त्रिलोचन को देखने और उनसे मिलने पर रेणु को बार-बार कबीर और कबीर से जुड़ी चीजें याद आती है। संस्मरण की अंतिम पंक्ति में वे त्रिलोचन की तुलना उन्हीं के समकालीन दो प्रगतिशील कवियों से करते हैं, लेकिन प्रश्न के रूप में। वे पूछते हैं वह कौन सी चीज है जिसे त्रिलोचन में जोड़ देने पर वह शमशेर हो जाता है और घटा देने पर नागार्जुन···? यह एक पहेली है जिसका कोई संकेत इस संस्मरण में स्पष्ट रूप से नहीं मिलता।

39-4 lnHkZ lfgr 0;k[;k

फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखा हुआ संस्मरण 'त्रिलोचन' आपने पढ़ लिया है। इस संस्मरण में रेणु ने त्रिलोचन के व्यक्तित्व के कई पहलुओं, एक कवि के रूप में उनकी विशिष्टता और कई ऐसे साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रसंगों पर टिप्पणियां की हैं जो इस संस्मरण को सिर्फ संस्मरण नहीं रहने देता बल्कि एक चिंतनशील निबंध भी बना देता है। इस संस्मरण में कई ऐसे प्रसंग और उद्धरण आते हैं जो उनके व्यापक ज्ञान और गहरी कलात्मक अभिरुचि का पता देता है। यहां हम उनके इस संस्मरण का एक अंश व्याख्या के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे आपको संस्मरण के अंशों की व्याख्या करने में मदद मिलेगी।

m)j.k% *कविता मेरे लिए समझने-बूझने या समझाने का विषय नहीं, जीने का विषय है। कवि नहीं हो सका, यह कसक सदा कलेजे को सालती रहेगी। और, अगर कहीं कवि हो जाता, तो, त्रिलोचन नहीं हो पाने का मलाल जीवन भर रहता।*

lnHkZ% हिंदी के प्रख्यात कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु के संस्मरण 'त्रिलोचन' से उपर्युक्त पंक्तियां उद्धृत की गयी हैं। यह संस्मरण हिंदी के प्रगतिशील कवि त्रिलोचन शास्त्री के बारे में है। एक कवि के रूप में त्रिलोचन की महानता का दिग्दर्शन कराने के लिए रेणु ने उक्त बात कही है।

O;k[;k इन पंक्तियों में रेणु ने कविता और एक कवि के रूप में त्रिलोचन शास्त्री पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। उनका मानना है कि कविता समझने-बूझने या समझाने का विषय नहीं है बल्कि जीने का विषय है। यानी कविता रेणु की दृष्टि में जीवन है। उसे जीया जाता है। कविता की महानता उसके जीवन के पर्याय होने में है। कहा तो नहीं गया है लेकिन ध्वनि यह भी निकलती है कि कहानी या उपन्यास को जीवन की तरह नहीं लिया जा सकता। चूंकि रेणु कवि नहीं थे, उन्होंने कहानी और उपन्यास ही लिखे इसलिए उन्हें इस बात का अफसोस था कि वे कवि न हो सके। लेकिन सभी कवियों की कविता को जीवन के पर्याय के रूप में नहीं माना जा सकता। इस दृष्टि से रेणु की नज़र में त्रिलोचन की कविता में वे सभी गुण है जो एक महान कविता में होने चाहिए। यही वजह है कि उन्हें इस बात का भी मलाल होता है कि वे त्रिलोचन नहीं हो पाये। और यह ऐसा दुख है जो जीवन भर उन्हें सालता रहेगा। इस तरह वे कविता और त्रिलोचन दोनों की महानता को अपने अंदाज में व्यक्त करते हैं।

fo'ks"k
1) यह उद्धरण संस्मरण में से लिया गया है जिसमें किसी कवि या किसी विधा की आलोचना या विवेचन करने की गुंजाइश नहीं होती। लेकिन एक कवि के रूप में त्रिलोचन पर की गयी टिप्पणी के माध्यम से रेणु ने कविता और त्रिलोचन दोनों के बारे में अपने विचारों को बहुत ही संयमित और स्पष्ट रूप में व्यक्त किया है।
2) उद्धरण की भाषा बहुत सहज और सरल है और लेखक जो कहना चाहता है उसे प्रभावशाली ढंग से कह दिया गया है।
3) ऊपर जिस अंश की व्याख्या की गयी है, ऐसे और भी कुछ अंश हैं जिनकी व्याख्या आप संस्मरण को पढ़कर और पूरी इकाई का अध्ययन कर स्वयं कर सकते हैं। यहां अभ्यास के लिए दो ऐसे अंश प्रस्तुत किये जा रहे हैं:

vH;kl

1) *किसी व्यक्ति के जीवन को, विभिन्न स्तरों पर, अलग-अलग दृष्टि से देखा-परखा जा सकता है। और इस तरह देखी हुई हर तस्वीर, दूसरे स्तर से देखी हुई 'छवि' से भिन्न ही नहीं -एक दूसरे को 'कंट्राडिक्ट' भी करती है। ऐसी अवस्था में अंततः कोई भी तस्वीर सही नहीं मानी जा सकती।*

   lanHkZ ....

   ....

   O;k[;k ....

   ....

   fo'ks"k ....

   ....

2) *वह कौन सी चीज है, जिसे त्रिलोचन में जोड़ देने पर वह शमशेर हो जाता है और घटा देने पर नागार्जुन…?*

   lanHkZ ....

   ....

   ....

   O;k[;k ....

   ....

   ....

   fo'ks"k ....

   ....

39-5 laLej.k dh varoZLrq

संस्मरण साहित्य की एक ऐसी विधा है जिसमें कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के बारे में अपनी स्मृति के आधार पर लिखता है। संस्मरण लिखने के लिए यह जरूरी है कि जिस व्यक्ति के बारे में संस्मरण लिखा जा रहा है और जो संस्मरण लिख रहा है, उनमें परस्पर संबंध हो। यह आवश्यक नहीं कि वह संबंध प्रगाढ़ हो। संस्मरण जिसके बारे में लिखा जाता है उस व्यक्ति

के व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएं उसमें अवश्य व्यक्त होती हैं इसलिए संस्मरण में रेखाचित्र की विशेषताएं भी समाहित होती हैं। इसी तरह उसके जीवन के बारे में भी हमें जानकारी मिलती है इसलिए उसमें जीवनी की विशेषताएं भी मिल जाती हैं। लेकिन संस्मरण जिसके बारे में लिखा जाता है के साथ-साथ उस व्यक्ति के बारे में भी हमें बताता है जो संस्मरण का लेखक है। इन विशेषताओं के आधार पर अगर हम इस संस्मरण पर विचार करें तो हम समझ सकते हैं कि इसमें उपर्युक्त सभी विशेषताएं दिखायी देती हैं।

यह संस्मरण हिंदी के प्रख्यात कथाकार और 'मैला आँचल' जैसे बहुचर्चित उपन्यास के लेखक फणीश्वरनाथ रेणु ने लिखा है और जिसके बारे में उन्होंने संस्मरण लिखा है वे भी हिंदी के प्रसिद्ध प्रगतिशील कवि हैं। संस्मरण पढ़ने से यह ज्ञात हो जाता है कि दोनों एक दूसरे को जानते थे और उनकी कई मुलाकातें हुई हैं। संस्मरण हमेशा अतीत के बारे में होता है। इस संस्मरण में भी रेणु ने उन्हीं प्रसंगों का उल्लेख किया है जो अतीत में घटित हुई हैं। जिस समय यह संस्मरण लिखा गया उस समय रेणु और त्रिलोचन दोनों जीवित थे। और दोनों प्रसिद्धी के शिखर पर थे। इस संस्मरण को पढ़ने से त्रिलोचन के जीवन की पूरी तस्वीर हमारे सामने नहीं उभरती लेकिन जिन प्रसंगों का भी उल्लेख हुआ है उससे उनके जीवन के बारे में कुछ जानकारियां अवश्य मिल जाती हैं। त्रिलोचन से जब रेणु पहली बार बनारस में गंगा के दषाश्वमेध घाट पर मिले और उन्होंने 'मैला आंचल' के एक प्रसंग का उल्लेख किया तो उससे रेणु को ये आभास हुआ कि त्रिलोचन को शायद उनका उपन्यास पसंद नहीं आया। स्पष्ट ही एक लेखक को दूसरे लेखक से प्रशंसा की आशा रहती ही है। त्रिलोचन शास्त्री रेणु जी से कुछ वरिष्ठ भी थे। इसलिए उनकी टिप्पणी से निराश होना स्वाभाविक था। हालांकि यह निराशा बहुत दिन नहीं रही जब उन्हें अपने किसी अन्य मित्र से मालूम हुआ कि त्रिलोचन जी 'मैला आँचल' के प्रशंसक है। यह प्रसंग दोनों के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालता है। त्रिलोचन रेणु से पहली बार मुलाकात होने पर सीधे-सीधे उपन्यास की प्रशंसा करने की बजाए उसके एक प्रसंग का वह भी व्यंग्य से उल्लेख करते हैं। इससे यह तो ज्ञात होता है कि त्रिलोचन जी ने उपन्यास न सिर्फ पढ़ा है बल्कि बहुत ध्यान से पढ़ा है और उसके मामूली से मामूली प्रसंग भी उनकी स्मृति में है। लेकिन उनके इस कथन से रेणु के मन में संदेह भी पैदा हो जाता है। त्रिलोचन कवि हैं और अपने स्वभाव के अनुसार वे कोई भी बात सीधे और सरल ढंग से नहीं कहते बल्कि कुछ व्यंजना लेकर कहते हैं। यह व्यंजना सामने वाले के लिए संकट भी पैदा कर देती है जैसाकि रेणु के साथ होता है।

त्रिलोचन के व्यक्तित्व की जिस दूसरी विशेषता की ओर रेणु ने ध्यान दिलाया है वह है उनका फक्कड़पन और ग्राम्यता। त्रिलोचन की कविता में लोकजीवन के इतने रंग-रूप मिलते हैं कि लेखक को कबीर और कबीर से जुड़ी परंपरा की याद आ जाती है। त्रिलोचन के प्रसंग में वे कबीरपंथी मठ के एक बाबा विद्यार्थी जी का उल्लेख करते हैं। इस उल्लेख का मकसद ही यह है कि वे त्रिलोचन को कबीर की परंपरा में रखकर देखते हैं। न सिर्फ कविता के संदर्भ में बल्कि उनके बाह्य व्यक्तित्व और स्वभाव के संदर्भ में भी। किसानी जीवन से त्रिलोचन का संबंध इतना स्वाभाविक लगता है कि उन्हें यह महसूस होता है कि त्रिलोचन भले ही मिथिलांचल न गये हों, जहां के रेणु रहने वाले थे और जिस मिथिलांचल को ही रेणु ने 'मैला आँचल' में पेश किया था, अगर वे वहां जाएं तो उन्हें वहां कुछ भी अजनबी नहीं लगेगा। न केवल उन्हें बल्कि वहां के ठेठ किसानों को भी त्रिलोचन अपने बीच के ही व्यक्ति लगेंगे। रेणु ने त्रिलोचन के व्यक्तित्व की इस विशेषता को सीधे-सीधे पेश नहीं किया है बल्कि उन्होंने यह कल्पना करते हुए पेश किया है कि यदि त्रिलोचन वहां गये तो क्या होगा।

त्रिलोचन के इस सहज और फक्कड़ व्यक्तित्व को कबीर से जोड़ते हुए वे त्रिलोचन की कविता पर आते हैं। त्रिलोचन हिंदी की प्रगतिशील धारा के कवि हैं। लेकिन वह अपने अन्य समकालीन कवियों से कई अर्थों में भिन्न भी हैं। शमशेर ने त्रिलोचन को धरती का कवि कहा है और यही ध्वनि रेणु के इस संस्मरण में भी सुनाई देती है। कवि के रूप में त्रिलोचन की महानता बताने के लिए वह कहते हैं कि कविता समझने-बूझने या समझाने का विषय नहीं है। कविता जीने का विषय है। वे इस बात पर अफसोस जाहिर करते हैं कि वे कवि नहीं हुए लेकिन इस बात पर और ज्यादा अफसोस जाहिर करते हैं कि अगर कवि होते भी तो इस बात का मलाल रहता कि वे त्रिलोचन नहीं हो सके। इस कथन से यह समझा जा सकता है कि रेणु की नज़र में एक कवि के रूप में त्रिलोचन का कितना महत्त्व है। रेणु को त्रिलोचन के सॉनेट विशेष रूप

से पसंद हैं। सॉनेट के लिए वे त्रिलोचन को 'शब्द योगी' की संज्ञा देते हैं। वे त्रिलोचन के सॉनेट को कबीर के साखी, शबद और रमैनी की कोटि में मानते हैं।

इसी संदर्भ में वे व्यक्ति के मूल्यांकन की बात करते हैं और रवींद्रनाथ टैगोर और उनके काव्य का उदाहरण देते हुए बताते हैं कि किसी भी रचनाकार का मूल्यांकन आसान नहीं होता। रेणु का कहना है कि व्यक्ति के जीवन को, विभिन्न स्तरों पर, अलग-अलग दृष्टि से देखा-परखा जा सकता है। इससे एक ही व्यक्ति की कई छवियां निर्मित हो सकती हैं और वे एक दूसरे से भिन्न ही नहीं एक दूसरे की विरोधाभासी भी हो सकती हैं। त्रिलोचन के व्यक्तित्व का एक अन्य पहलू उनको भोजन करते हुए सामने आता है जिसका आत्मीय चित्रण रेणु ने किया है। त्रिलोचन बैठकर आराम से बातें करते हुए भोजन करते हैं और रेणु को लगता है कि आजकल खड़े होकर खाने की जो 'बुफे' पद्धति है उससे त्रिलोचन जैसे व्यक्ति का कभी पेट नहीं भर सकता। रेणु के लिखे इस संस्मरण में त्रिलोचन के व्यक्ति और रचनाकार दोनों रूपों को उन्होंने कबीर और कबीर परंपरा से जोड़कर देखा है। और यह भी महज संयोग नहीं है कि उन्होंने इसमें अन्य जिन कवियों को याद किया है, वे रवींद्र हो या फारसी के सूफ़ी कवि जलालुद्दीन रूमी वे किसी न किसी रूप में कबीर की परंपरा से जुड़ते हैं। त्रिलोचन निश्चय ही रहस्यवादी कवि नहीं हैं, प्रगतिशील कवि हैं। लेकिन उनकी कविता का मिज़ाज़ प्रगतिशील कवियों में भी काफी अलग सा है। प्रगतिशील कवियों में शमशेर और नागार्जुन से कुछ जुड़ते हैं और कुछ उनसे भिन्न हैं।

ck/k i'u

4. रेणु ने त्रिलोचन शास्त्री को पहली बार देखकर किसको याद किया?
   क) बाबा विद्यार्थी जी को
   ख) शमशेर को
   ग) रवींद्रनाथ को
   घ) कबीर को ( )
5. रेणु के कविता संबंधी विचारों को एक वाक्य में प्रस्तुत कीजिए।

   .....

   .....
6. त्रिलोचन को देखकर रेणु को कबिराहा बाबा की याद क्यों आई?

   .....

   .....

39-6 y[kdh; 0;fDrRo dh vfHk0;fDr

संस्मरण में निबंध की अपेक्षा लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव ज्यादा नज़र आता है। दरअसल संस्मरण में लेखक प्रत्यक्षतः उपस्थित रहता है। इस संस्मरण में भी ऐसा ही है। रेणु पूरे संस्मरण में त्रिलोचन के साथ उपस्थित दिखायी देते हैं। यही कारण है कि फणीश्वरनाथ रेणु के इस संस्मरण में त्रिलोचन शास्त्री का व्यक्तित्व जितना उभरकर आता है उतना ही स्वयं रेणु का व्यक्तित्व भी उभरकर आता है। रेणु इस संस्मरण में हर कहीं उपस्थित हैं। अपने सोच और अपनी अभिरुचि के साथ। रेणु और त्रिलोचन दोनों ही हिंदी के लेखक हैं लेकिन त्रिलोचन मुख्य रूप से कवि हैं जबकि रेणु कथाकार। त्रिलोचन ने कुछ कहानियां भी लिखी हैं लेकिन उनकी पहचान कवि के रूप में ही हैं। रेणु को इस बात का अफसोस है कि वे कवि नहीं हैं जबकि कथाकार होना कवि होने से कमतर नहीं है। लेकिन स्वयं रेणु कवि होने को ज्यादा महत्त्व देते प्रतीत होते हैं। रेणु भले ही कवि न हों लेकिन कविता में उनकी गहरी रुचि भी है और समझ भी। वे न सिर्फ त्रिलोचन के काव्य की विशेष रूप से उनके सॉनेट की विस्तार से चर्चा करते हैं बल्कि इस संस्मरण में उन्होंने जिन अन्य रचनाकारों का उल्लेख किया है, वे सब भी मुख्यतः कवि हैं। चाहे कबीर हों, रूमी हों या नजरुल इस्लाम और रवींद्रनाथ टैगोर। इसी संदर्भ में उनका यह कहना कि उन्हें ज़िंदगी भर इस बात का अफसोस रहेगा कि वे कवि न हो सके, इसे समझा जा सकता है।

रेणु के इस संस्मरण को पढ़ने से मालूम पड़ता है कि उनकी अभिरुचियों का क्षेत्र बहुत विशाल था। हिंदी साहित्य के अलावा बांग्ला काव्य परंपरा की भी उनको पूरी जानकारी थी। रवींद्र और नजरुल इस्लाम का उल्लेख तो आता ही है इनके अलावा रवींद्र संगीत के गायकों और

बाउल परंपरा के गायकों से भी उनका पर्याप्त परिचय है। उन्होंने कुछ जगह कविताओं के उद्धरण भी दिये हैं जो काव्य के प्रति उनके गहरे लगाव को व्यक्त करता है। रेणु के व्यक्तित्व की विशेषता यह भी है कि वह मामूली सी लगने वाली बात को भी किसी बड़े संदर्भ के साथ जोड़ देते हैं और उसे एक दार्शनिक आयाम भी दे देते हैं। त्रिलोचन को भोजन करते देखते हुए वह भोजन करने के विभिन्न तरीकों और उसकी विस्तृत प्रक्रिया का वर्णन यह बताता है कि एक रचनाकार के रूप में उनके लिए छोटी-से-छोटी बात का भी कितना महत्त्व है। शब्दों के साथ खिलवाड़ करना उनकी भाषिक क्षमता को दर्शाता है। मसलन, *'सुपर मार्केट डिपार्टमेंट स्टोर संस्कृति'* या *'सुरक्षा चैतन्य समाज' 'चतुर चीलों'* जैसे पदों का प्रयोग उनकी मौलिक कल्पनाशीलता को दर्शाता है। संस्मरण विस्तृत न होते हुए भी, रेणु जी कुछ प्रसंगों के माध्यम से ही न सिर्फ त्रिलोचन के व्यक्तित्व को उभारने में कामयाब रहे हैं, वरन अपने बारे में भी उन्होंने बहुत कुछ कहा है।

cks/k i'u

7. फणीश्वरनाथ रेणु के व्यक्तित्व की कोई एक विशेषता बताइए।

.....

.....

.....

8. फणीश्वरनाथ रेणु अपनी किस रचना के कारण जाने जाते हैं?

.....

.....

39-7 lajpuk-f'kYi

संस्मरण में भी भाषा और शैली का विशेष महत्त्व है। रेणु का हिंदी भाषा पर पूरा अधिकार था। वे भाषा की शुद्धता के समर्थक नहीं थे। मैला आँचल में उन्होंने मैथिली भाषा का प्रयोग बहुत ही सृजनात्मक किया था। संस्मरण कथात्मक विधा नहीं है फिर भी वे भाषा में अवसर के अनुरूप नये-नये प्रयोग करने से नहीं हिचकिचाते। संस्मरण की कोई निश्चित शैली नहीं होती। इसे निबंध की तरह भी लिखा जा सकता है, जीवनी की तरह और कहानी की तरह भी। रेणु के इस संस्मरण की भाषा और शैली की विशेषताओं का विवेचन हम इस भाग में करेंगे।

Hkk"kk

फणीश्वरनाथ रेणु आंचलिक कथाकार हैं। आंचलिक कथाकार की विशेषता यह होती है कि वह अपने लेखन में क्षेत्र विशेष की भाषा का प्रयोग इस तरह करता है कि उससे रचना में आंचलिकता का प्रभाव साफतौर पर देखा जा सके। कथा साहित्य में आंचलिकता भाषा के माध्यम से ही अपने को व्यक्त करती है। लेकिन इस संस्मरण का संबंध अंचल विशेष से नहीं है। रेणु यदि मिथिलांचल के रहने वाले थे, तो, त्रिलोचन बनारस के पास के रहने वाले थे। जहां की भाषा भोजपुरी है। लेकिन दोनों को जोड़ने वाली भाषा वह खड़ी बोली है जो हिंदी के इन दोनों लेखकों द्वारा अपने-अपने मिज़ाज़ के अनुसार प्रयुक्त हुई है। इस संस्मरण में रेणु ने परिनिष्ठित खड़ी बोली का ही प्रयोग किया है लेकिन विषय और प्रसंग के अनुसार उन्होंने भाषा का स्वरूप बदला भी है। मसलन, कबिराहा बाबा का प्रसंग आने पर वे विद्यार्थी जी के बारे में अन्य लोगों के मुख से मैथिली ही बुलवाते हैं: *"बिदियारथीजी मोती जैसन अक्षर में बीजक लिखलन हैऽऽऽऽई बिदियारथीजी तो बीजक के एक-एक गो 'साखी' और 'शबद' के ऐसन ऐसन बिलच्छन आ 'अमनियाँ अरथ'अपन-तहियायेल भाषा' में समझावे हैं कि सार 'सुन्ननिहार-सव' के 'अथि' फट जायेऽऽऽऽ"*। भाषा के मामले में रेणु जी का दृष्टिकोण उदार है। इस संस्मरण की भाषा में विषय और भाव के अनुसार शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। तत्सम, तद्भव, देशज, अंग्रेजी, उर्दू आदि जो भी शब्द हिंदी में खप सकते हैं और रेणु जी जो कहना चाहते हैं उसको प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने में सहायक होते हैं तो उनका इस्तेमाल करने में वे बिल्कुल नहीं हिचकिचाते। उदाहरण के लिए, इन पंक्तियों को देखें, *"बड़े-बड़े गृहस्थ गृहों की 'भक्तिमय आत्माएँ' उनके पास आकर, अपने चेहरे से 'चुनरी' हटाकर, नैनों से नैना मिलाती 'कबिराहा अंदाज' में दोनों हाथ जोड़कर, विगलित-सी होती हुई पुकार उठेंगी'—सा-हे-ब!*

बंदगी!!' निश्चय ही त्रिलोचन जी अचरज में पड़ जायेंगे। मजा आ जायेगा।" इन चार पंक्तियों में आप देखेंगे कि गृहस्थ गृहों, विगलित-सी, जैसे तत्सम शब्दों का प्रयोग है, तो नैना, हाथ, जोड़कर, अचरज जैसे तद्भव शब्दों का भी प्रयोग है। साथ ही, अंदाज, पुकार, मजा, बंदगी जैसे उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। भाषा की यह छटा पूरे संस्मरण में हर कहीं दिखायी देती है। रेणु की भाषा रचनाकार की भाषा है। वे भाषा का उपयोग रचनात्मक ढंग से करते हैं। यही कारण है कि रेणु की गद्य रचना पढ़ते हुए कथा रस का आस्वादन आता है।

'kSyh

रेणु द्वारा लिखे इस संस्मरण में कई अन्य विधाओं की विशेषताओं का समावेश भी हुआ है। संस्मरण का अर्थ है, स्मृतियों के आधार पर किसी व्यक्ति, घटना, प्रसंग आदि के बारे में लिखना। स्मृतियां हमेशा बीते हुए के बारे में होती है। अतीत ही स्मृतियों के रूप में हमारे सामने आता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि संस्मरण हमेशा अतीत के बारे में होता है। लेकिन संस्मरण किसी न किसी मकसद से प्रेरित होकर लिखा जाता है। यह संस्मरण हिंदी के कथाकार रेणु द्वारा हिंदी के ही एक अन्य प्रख्यात कवि त्रिलोचन शास्त्री के बारे में लिखा गया है। हिंदी के इन दो प्रसिद्ध रचनाकारों के बारे में पाठक ज्यादा से ज्यादा जानने को उत्सुक रहते हैं और अगर संस्मरण एक लेखक द्वारा दूसरे लेखक के बारे में है, तो उसमें दी गयी जानकारी का महत्त्व विशेष रूप से बढ़ जाता है। रेणु जी चूंकि कथाकार हैं इसलिए वे संस्मरण में कहानी की विशेषताओं का सहज ही समावेश कर डालते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि संस्मरण को कहानी की तरह लिखा गया है। दरअसल कुछ प्रसंग उन्होंने कहानी की तरह लिखे हैं। जैसे त्रिलोचन जी के भोजन का प्रसंग या पहली मुलाक़ात का प्रसंग। लेकिन कुछ अन्य प्रसंगों में उन्होंने आलोचक की भूमिका भी निभायी है। त्रिलोचन जी की कविता का विश्लेषण उन्होंने विचारक की तरह किया है। लेकिन विश्लेषण करते हुए भी आलोचना की तरह शुष्क नहीं होने देते जहां भी ऐसा होता नज़र आता है वे कुछ ऐसा प्रसंग ले आते हैं कि पाठक सहज ही समझ लेता है कि वह संस्मरण पढ़ रहा है, आलोचना नहीं। त्रिलोचन की कविता की विशिष्टता बताते हुए वे इस बात का ध्यान रखते हैं कि त्रिलोचन की कविता के प्रति उनकी भावनाएं तो व्यक्त हो जाए लेकिन वे विस्तृत विश्लेषण से बचते भी हैं। मसलन वे लिखते हैं, *"कवि नहीं हो सका, यह कसक सदा कलेजे को सालती रहेगी। और अगर कहीं कवि हो जाता तो, त्रिलोचन नहीं हो पाने का मलाल जीवन-भर रहता"।* इस वाक्य से एक कवि के रूप में त्रिलोचन के प्रति उनकी भावना का पता चलता है और बल भी उसी पर है। इसी तरह जब वे त्रिलोचन के सॉनेट पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि *"त्रिलोचन ने अपने बारे में अपने मुँह से अपने सॉनेट में जो कुछ भी कहा है, उसके अतिरिक्त "और कुछ" जानने-सुनने की वासना मन में कभी नहीं जगी"*। इन पंक्तियों का अर्थ है कि त्रिलोचन के सॉनेट उनके व्यक्तित्व का दर्पण है और सॉनेट के माध्यम से त्रिलोचन को सच्चे अर्थों में जाना जा सकता है। सॉनेट के कारण वे उन्हें शब्द योगी कहते हैं और उनकी तुलना कबीर के काव्य से करते हैं। स्पष्ट ही यहां भावनाओं से ज्यादा कुछ कहा गया है। लेकिन संस्मरण की सीमाओं में रहते हुए ही वे अपनी बात कहते हैं।

त्रिलोचन से संबंधित कई निजी प्रसंगों का उल्लेख करते हुए भी उन्होंने उन तथ्यों का समावेश नहीं किया है जिससे कि संस्मरण जीवनी की तरह बन जाए। उनका मुख्य बल इस संस्मरण में त्रिलोचन के रचनाकार व्यक्तित्व विशेष रूप से कवि व्यक्तित्व को उभारना है। भोजन वाले प्रसंग में भी उन्होंने एक कवि के व्यक्तित्व के ऐसे पहलू को उजागर किया है जो भोजन करते हुए भी विचार-विमर्श की दुनिया से अपने को मुक्त नहीं रखता। इस तरह यह संस्मरण त्रिलोचन के व्यक्तित्व का ऐसा रेखाचित्र प्रस्तुत करता है जिसमें रेणुजी ने बहुत कम रेखाओं के द्वारा ही त्रिलोचन के व्यक्तित्व की केंद्रीय विशेषताओं को पूरी प्रबलता और प्रभाव से उभारा है।

39-8 ifrik|

संस्मरण हमेशा किसी महत्तर उद्देश्य से प्रेरित होकर लिखा जाता है। जब कोई लेखक किसी अन्य लेखक पर संस्मरण लिखता है तो स्वाभाविक है कि वह उस लेखक के व्यक्तित्व के कुछ ऐसे पहलुओं को उजागर करता है जो उनके रचनाकार और व्यक्ति दोनों को समझने में सहायक हो। रेणु के इस संस्मरण में त्रिलोचन शास्त्री के ये दोनों पहलू प्रभावशाली रूप में

उभरकर सामने आते हैं। व्यक्ति और रचनाकार दोनों रूपों में त्रिलोचन के व्यक्तित्व की विशिष्टता को रेणु ने प्रभावशाली ढंग से उभारा है। इसके लिए उन्होंने कुछ ही प्रसंगों का उल्लेख किया है। लेकिन खास बात यह है कि दोनों को एक दूसरे से अलग कर नहीं बल्कि एक दूसरे के माध्यम से उन्होंने दोनों पहलुओं को उभारा है। मसलन, त्रिलोचन के व्यक्तित्व के लोक रूप को 'मैला आँचल' के प्रसंग के माध्यम से उभारा है जिससे वे त्रिलोचन को अपने गाँव और वहां के लोगों के साथ जोड़कर उनके लोक व्यक्तित्व को रेखांकित करते हैं। उनकी इसी विशेषता को बाद में वे कबीर के साथ भी जोड़ते हैं और कबीर के काव्य से त्रिलोचन के सॉनेट को जोड़ते हैं। इसी तरह भोजन के प्रसंग में भी त्रिलोचन के व्यक्तित्व का लोक रूप ही सामने आता है लेकिन यह व्यक्तित्व उनके कवि रूप में भी प्रतिबिंबित होता है। हिंदी के प्रगतिशील कवियों में त्रिलोचन को प्रायः लोक चेतना का कवि कहा गया है और यह संस्मरण इस बात की पुष्टि करता है।

cks/k iz'u

9. इस संस्मरण में किन अन्य विधाओं का प्रभाव दिखायी देता है?

.....

.....

10. संस्मरण की भाषा की दो विशेषताएं बताइए।

.....

.....

11. इस संस्मरण में त्रिलोचन के कौन से दो पहलू उभरकर आये हैं?

.....

.....

vH;kl

3. इस संस्मरण के आधार पर त्रिलोचन के रचना व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।
4. कविता के बारे में रेणु के विचारों को प्रस्तुत करते हुए बताइए कि वे त्रिलोचन के काव्य से क्यों प्रभावित थे।
5. त्रिलोचन संस्मरण की भाषा और शैली की विशेषताएं बताइए।

39-9 lkjk'k

हिंदी गद्य के इस पाठ्यक्रम की 39वीं इकाई और खंड छह की इस सातवीं इकाई का अध्ययन आपने कर लिया है।

- इस इकाई में आपने हिंदी कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा हिंदी कवि त्रिलोचन शास्त्री पर लिखे संस्मरण 'त्रिलोचन' का वाचन किया है। इस संस्मरण को पढ़ने के बाद इसका सार भी आपने पढ़ा है। इससे आपको ज्ञात हो गया होगा कि त्रिलोचन के रचना व्यक्तित्व की किन विशेषताओं से रेणु प्रभावित रहे हैं। आप स्वयं इस संस्मरण का सार अपने शब्दों में लिख सकते हैं।
- आपने संस्मरण के एक प्रमुख अंश की संदर्भ सहित व्याख्या का भी अध्ययन किया है। आप इसके आधार पर और पूरी इकाई पढ़ने के बाद कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकते हैं।
- संस्मरण की अंतर्वस्तु की विशेषताओं का भी आपने अध्ययन किया है। इस अध्ययन से आप यह जान पाये होंगे कि रेणु की नज़र में त्रिलोचन की कौन-सी विशेषताएं हैं। आपने यह भी जाना है कि त्रिलोचन व्यक्ति के तौर पर भी और कवि के तौर पर भी ग्रामीण अंचल के लोगों से, उनकी सांस्कृतिक विरासत से काफी एकमेक हैं। त्रिलोचन का काव्य कबीर परंपरा का काव्य है। स्वयं रेणु को इस बात का मलाल है कि वे त्रिलोचन की तरह कवि नहीं है। आप इस संस्मरण की अंतर्वस्तु का विश्लेषण करते हुए उसकी विशेषताएं बता सकते हैं।
- अन्य कई गद्य विधाओं की तरह संस्मरण पर भी लेखक के व्यक्तित्व का प्रभाव होता है। यह प्रभाव इस संस्मरण पर भी देखा जा सकता है। रेणु द्वारा लिखे गये इस संस्मरण

में रेणु के व्यक्तित्व की कई विशेषताओं से हम परिचित होते हैं। रेणु का लोक जीवन, साहित्य, संगीत आदि कला परंपराओं की विस्तृत जानकारी का परिचय भी हमें इस संस्मरण से मिलता है। इसके अलावा स्वयं रेणु की व्यक्तिगत अभिरुचियों से भी हम परिचित होते हैं। आप इस इकाई को पढ़कर संस्मरण पर रेणु के व्यक्तित्व के प्रभाव का विवेचन कर सकते हैं।

- रेणु के संस्मरण में भाषा के कई रूप देखने को मिलते हैं। भाषा की रचनात्मकता का प्रमाण यह संस्मरण भी है। उनके इस संस्मरण में तत्सम, तद्भव, देशज, उर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। यही नहीं उन्होंने कई नये प्रयोग भी विषय की जरूरत के हिसाब से किये हैं। संस्मरण गद्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है लेकिन इस विधा के लेखन पर भी अन्य विधाओं का प्रभाव देखा जा सकता है। इस संस्मरण में भी कहानी, रेखाचित्र और आलोचना विधाओं का यथास्थान प्रयोग किया गया है। इस इकाई को पढ़कर आप इस संस्मरण की भाषा और शैलीगत विशेषताओं का उल्लेख कर सकते हैं।
- एक लेखक द्वारा दूसरे लेखक पर संस्मरण लिखने के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। इस संस्मरण को पढ़ने से हम प्रगतिशील परंपरा के विशिष्ट कवि त्रिलोचन शास्त्री के रचना व्यक्तित्व की कई विशेषताओं से परिचित होते हैं। साथ ही, हम रेणु के गद्य लेखन विशेष रूप से संस्मरण लिखने की उनकी रचनात्मक क्षमता से भी परिचित होते हैं। इस संस्मरण और उससे संबंधित इकाई को पढ़कर आप इसके उद्देश्य की व्याख्या भी कर सकते हैं।

39-10 ck/k i'uk@vH;kl dk mÙkj

Ckk/k i'uk dk mÙkj

1. ख) 2. घ)
3. रवींद्रनाथ टैगोर, त्रिलोचन शास्त्री, कबीर, नज़रुल इस्लाम, नागार्जुन और शमशेर।
4. क)
5. रेणु कविता को समझने-बूझने या समझाने का विषय नहीं मानते थे बल्कि उनके विचार में कविता जीने का विषय है।
6. कबिराहा बाबा में जो सादगी और सहजता तथा लोक से जुड़ाव दिखायी देता था, वह त्रिलोचन के व्यक्तित्व में भी रेणु को दिखायी दी।
7. रेणु के व्यक्तित्व की एक विशेषता यह है कि वह मामूली से मामूली लगने वाली बात को भी किसी बड़े संदर्भ से जोड़कर उसे नया अर्थ दे देते थे।
8. फणीश्वरनाथ रेणु अपने आंचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' के लिए जाने जाते हैं। यह उनका पहला उपन्यास था।
9. रेखाचित्र, कहानी और आलोचना विधा का प्रभाव इस संस्मरण पर दिखायी देता है।
10. i) भाषा के प्रति रेणु का दृष्टिकोण उदार था। वे अन्य भाषाओं के शब्दों का भी आवश्यकतानुसार प्रयोग करते थे।
    ii) भाषा का रचनात्मक उपयोग करते थे।
11. व्यक्ति त्रिलोचन और कवि त्रिलोचन।

vH;kl

1. त्रिलोचन संस्मरण और इकाई का अध्ययन कर व्याख्या स्वयं करने का प्रयास करें।
2. त्रिलोचन संस्मरण और इकाई का अध्ययन कर व्याख्या स्वयं करने का प्रयास करें।
3. भाग 39.5 को ध्यान से पढ़कर उत्तर लिखिए।
4. भाग 39.5 और 39.6 को ध्यान से पढ़कर उत्तर स्वयं लिखिए।
5. भाग 39.7 को ध्यान से पढ़कर उत्तर स्वयं लिखिए।